

868. = KĀN. 48 bei WEBER. VRDDHA-KĀN. 5, 1 (c. एव st. एको. d. सर्वस्याभ्यागतो).
873. Auch PAÑKAR. 4, 10, 20.
875. = VRDDHA-KĀN. 6, 19. a. b. गूढमैयुनधारिष्टं काले काले च सं०. c. अग्रमत्तमवि-
श्रासः. d. पञ्च (wie wir geändert haben) शितेच्च.
886. Lies: *auf jeden Theil des Körpers* st. *auf den Körper*.
898. 900. Vgl. Spruch 3996.
901. ÇATAKĀV. 18. d. दुर्ज्ञातानां.
903. = KĀN. 53 bei WEBER. a. आसमीदय (blosser Schreibfehler) st. नासमीदय.
906. = VRDDHA-KĀN. 5, 20 (19). b. चले जीवितमंदिरे. c. d. चलाचले च संसारे धर्म
एको हि निश्चलः.
908. = PRASAṅGĀBH. 13, b. a. चतुरः.
910. = KĀN. 62 bei WEBER.
913. Vgl. Spruch 3443 und die Anmerkung dazu weiter unten.
918. ÇATAKĀV. 68. a. अलसवति st. अलकवति. BHARṬ. 1, 49 lith. Ausg. III. a. °भि-
तिरलकवति.
920. ÇATAKĀV. 103. c. कञ्चुकिताः.
924. = KĀM. NĪTIS. 8, 62 in folgender Fassung: किं कर्म (मर्म die Scholien) च
वित्तं (वीर्यं die Scholien) च विज्ञानाति निज्ञो रिपुः । दहृत्पतर्गतश्चैव शुष्कवृत्तमिवानलः ॥
925. BHARṬ. 2, 86 lith. Ausg. III. b. चन्द्रः क्षीणो ऽपि वर्धते लोके.
942. Vgl. Spruch 3377.
943. Vgl. Spruch 4761.
945. = VRDDHA-KĀN. 12, 22.
947. = VRDDHA-KĀN. 14, 5. b. दानमनागपि.
951. = VRDDHA-KĀN. 16, 2. b. सविधमः. c. d. हृदये चिंतयेत्यन्यं (auch चिंतयेत्यन्नं)
न स्त्रीणामेकतो रतिः.
954. ÇATAKĀV. 80. d. भवेद्गुणवतां.
956. BHARṬ. 3, 91 lith. Ausg. III. c. उपरिष्ठाच्च चाधो.
962. ÇATAKĀV. 13. d. निवृत्त्य माननिपुणे (gute Lesart). BÖHTL. — Sollte nicht नाम
st. मान zu lesen sein? SCHÜTZ.
965. ÇATAKĀV. 81. a. गच्छतु. c. शौर्यं वज्रनिरस्तमस्तु च तथाप्यर्थस्तु नः के०.
967. BHARṬ. 1, 89 lith. Ausg. III. c. गच्छंतीषु st. यच्छंतीषु.
968. = MBh. 13, 1825. d. गङ्गा पुण्यजलां शिवाम्.
970. = VRDDHA-KĀN. 1, 11. c. मित्रं चापत्तिकालेषु.
972. = PRASAṅGĀBH. 16, a. c. d. गुणाधिके पुंसि जनस्तु रज्जते जनानुषंगप्रभवा.